शेख़ फ़रीद – सबद ६६

जां कुआरी ता चाउ वीवाही तां मामले ॥

सलोक, सेख फरीद, गुरु ग्रंथ साहिब, १३८१

जां कुआरी ता चाउ वीवाही तां मामले ॥
फरीदा एहो पछोताउ वति कुआरी न थीऐ ॥६३॥

सार: हर लगाव की क़ीमत होती है जो हमारी आंतरिक स्वतंत्रता को प्रभावित करती है। जो संबंध जान-पहचान से शुरू होता है, वह निर्भरता में बदल सकता है और अंततः भय में, जो लगाव की ओर ले जाता है। जैसे-जैसे हम अपने प्रिय संबंध को सहेजने, उनको ख़ुश करने और सुरक्षित रखने पर ध्यान केंद्रित करते हैं, हमारी बेफ़िक्री धुंधली पड़ने लगती है। इसके लिए परिणामों के साथ समझौता करना और नियंत्रण की आवश्यकता होती है, ख़ुशी तब सहज नहीं लगती। वियोग, करुणा की कमी नहीं है बल्कि अधिकार जताए बिना प्रेम करने की क्षमता है। इस दृष्टिकोण को अपनाने से अधिक संतुष्टिदायक और मुक्त जीवन प्राप्त हो सकता है।

जां कुआरी ता चाउ वीवाही तां मामले ॥
जब अकेला था तब इच्छा थी, विवाह के बाद उलझनें बढ़ गईं। यह स्वतंत्र मन की ख़ुशी से, मोह और अहं के कारण होने वाले कष्ट की ओर परिवर्तन को दर्शाता है।

फरीदा एहो पछोताउ वति कुआरी न थीऐ ॥६३॥
फ़रीद कहते हैं कि इस बात का पछतावा है कि अब फिर से शादी से पहले वाली अवस्था में नहीं लौटा जा सकता। यह समय और अनुभवों के ऐसे स्वभाव को दिखाता है जिसे बदला नहीं जा सकता। (६३)

तत्त्व: शेख़ फ़रीद हमें याद दिलाते हैं कि हम जिस भी पल का अनुभव करते हैं, वह समय में हमेशा के लिए अंकित हो जाता है और उसे बदला नहीं जा सकता। एक बार कहे गए शब्द वापस नहीं लिए

जा सकते और लिए गए निर्णय पलटे नहीं जा सकते। समय केवल एक ही दिशा में बहता है और वह हमें अपने साथ बहा ले जाता है चाहे हम उसका विरोध करें या उसके प्रवाह के साथ बह जाएं। समय की इस अपरिवर्तनीयता में, हमें एक ऐसा अतीत मिलता है जिसमें हम वापस तो नहीं लौट सकते लेकिन हम उसके प्रति अपनी समझ को और गहरा ज़रूर कर सकते हैं। इसलिए, लौटना पीछे हटने के बारे में नहीं है बल्कि यह अपनी अंतरात्मा के नवीनीकरण की ओर आगे बढ़ना है।

पहलकदमी

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com